

भारत के
अठारहवाँ लोकसभा चुनाव
२०२४

घोषणा पत्र

A

I

A

M



अखिल भारतीय
आर्य महामंडल



अखिल भारतीय आर्य महासभा

(भारतीय चुनाव आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त पार्टी)

घोषणा पत्र

२०२४

लोकसभा चुनाव २०२४

अखिल भारतीय आर्य महासभा

नव हिमायत पुर, कृष्णापुर

वीरभूम - ७७१२३७

पश्चिम बंगाल



विभाश चंद्र अधिकारी
अध्यक्ष
(अखिल भारतीय आर्य महासभा)

हमारा लक्ष्य, लोगों की सभी जस्सतों को पूरा करना है

प्रिय बंगाल के नागरिकों! १८ वीं लोकसभा चुनाव में आने का हमारी पार्टी का मुख्य उद्देश्य है आपके सपनों को साकार करना है आपके जीवन काल में सुख-समृद्धि लाना हमारे पार्टी का लक्ष्य है। बड़े-बड़े वादे करने वाले राजनीतिक दल या व्यक्तित्व व हम पर वर्षों से शासन करते आ रहे हैं लेकिन लोग जहां थे वहीं हैं।

लोगों के सपनों के पुरा करने के लिए और २०२४ से २०२९ तक अगले पांच वर्षों के लिए देश को प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाएंगे। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह बड़ी चुनौती या परीक्षा काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। केवल राजनीतिक दल ही नहीं उसके नेता बल्कि देश के नागरिक जो लोग अपने चहेते नेताओं का चुनाव करेंगे उनकी भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। बड़े आबादी वाले इस देश का भविष्य अगले पांच साल तक इन्हीं प्रतिनिधियों या सांसदों के हाथ में रहेगा। लेकिन वास्तविक स्थिति पर नजर डालें तो पाएंगे कि न तो सत्ताधारी दल और न ही उसकी सहयोगी पार्टियों ने चुनाव में वादे किए बल्कि इन वादों को पूरा करने में भी सक्षम नहीं हैं। देखा जाता है कि भ्रष्टाचार का कीड़ा उनकी दिमाग में घुस गया है। इससे बाहर निकलना उनके लिए संभव नहीं है। इसका कारण साफ है। यह उनका धर्मत्याग है। लेकिन कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य कैसा होगा इसकी परिभाषा में कहा गया है कि राज्य का मुख्य लक्ष्य नागरिकों को खुश और शांतिपूर्ण रखना है। 'सुखस्य मूलं धर्म' धर्म अर्थ में निहित है; 'धर्मस्य मूलं धर्म'। पैसा सिर्फ पैसा नहीं है, इसका आधार चतुर्गा-वर्णाश्रम और चतुराश्रम धर्म का अभ्यास है। इससे स्पष्ट है कि जनता का कल्याण सुनिश्चित करने के लिए स्वैक्ष्य राज्य का गठन करना एवं छोटे बड़ों को एक सम्मान अधिकार दिलाना हमारी पार्टी का मुख्य उद्देश्य है। हमारे पार्टी का कार्य नागरिकों या प्रजा को धर्म के मार्ग पर चलाना होगा। फिर यह नागरिकों की जिम्मेदारी है कि वे उन लोगों को त्याग दें जो अपने वादों को पूरा करने में विफल हुए हैं, जो न्याय और सच्चाई के मार्ग से भटक जाते हैं और दुसरा विकल्प चुनते हैं। आर्यों ने देश

घोषणा पत्र, २०२४

में इस आदर्श या नैतिक राज्य का निर्माण किया। विश्व के जिन-जिन देशों ने शासन व्यवस्था में आर्य सिद्धान्तों का पालन किया है, उन सभी देशों में सुख, शान्ति एवं स्थिरता स्थापित हुई है। उस रास्ते पर चलने के लिए अप लोग आग्रह है। बंगाल की विचारशील जनता को। जिसका मुख्य उद्देश्य भारत के हरित गौरव को पुनः स्थापित करना है, क्योंकि भारत आर्य सभ्यता का हृदय स्थल है। आर्य सभ्यता भारत से फैली। वेद, संहिता और पुराण शास्त्रों के अनुसार आर्य समाज की चर्चा की गई है। जिससे यह सिद्ध होता है कि आर्यों का प्रभुत्व विश्व में फैल गया है। ऋग्वेद में हमें सुदास राजा की पहचान मिलती है; जिन्होंने दुनिया जीत ली। उनका उल्लेख ऐतरेय ब्राह्मण तथा पुराणों में विभिन्न स्थानों पर मिलता है। महाराजा सागर सप्तद्वीप ने विश्व पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया। उसने कितने निष्क्रिय राष्ट्रवादियों को देश से बाहर निकाला। उन्हें सुधी प्राप्त करने के बाद पलायन करने और बसने के लिए मजबूर किया गया। बुद्धपुत्र पुरुरवा के पास समुद्र के मध्य में तेरह द्वीप थे। अन्य कई घटनाओं का उल्लेख किया जा सकता है जिनसे सिद्ध होता है कि भारतीय आर्यों का विश्व के विभिन्न भागों में आवागमन था।

भारत से आर्यों ने अपना प्रभाव पूर्व, पश्चिम और उत्तर तक फैलाया। सर वाल्टर रैले—विश्व इतिहास को अंग्रेजी भाषा में लिखने वाले पहले व्यक्ति थे। उनके अनुसार—‘भारत मनुष्यों का रहने का मूल निवास स्थान है। भाषा की समानता, विचार की समानता, रूप और स्वभाव की समानता आदि से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि भारतीय आर्य रीति-रिवाज, भाषा और धर्म में गहरी समानता देखी जा सकती है।’ कर्नल ओलकोट के अनुसार—‘संस्कृत की तुलना यदि अन्य भाषाओं से की जाए तो उसे काफी हद तक समझा जा सकता है। आर्य सभ्यता का प्रकाश भारत से यूरोप के विभिन्न नगरों तक पहुँचाया गया।’ सर विलियम जोन्स ने कहा था—‘प्राचीन हिंदुओं की पहचान प्राचीन फारसियों, इथियोपियाई, मिस्रियों, केन्याई, यूनानी, टस्कन, सिडियन और गोथ, सेल्ट्स, चीनी, जापानी और पेरुवियों से की जाती है।’ कई पश्चिमी विद्वान मिस्र को सभ्यता का जन्मस्थान मानते हैं, लेकिन भारतीय आर्य संस्कृति मिस्र के गौरव का मूल है। जो लोग १७वीं लोकसभा का चुनाव जीत चुके हैं, वे अन्य देशों के समकक्ष तरह-

तरह की अच्छी-खासी सहायता और उपहार देकर अपनी ५६ इंच की छाती फुलाने में व्यस्त हैं, लेकिन वर्तमान समय राज्य प्रबंधक उनकी धमकियों के सामने झुक रहे हैं और आत्मसमर्पण कर रहे हैं। हमारी पार्टी इसकी कड़ी निंदा करती है।

हम प्राचीन भारत के गौरव, भाग्य, वीरता, पौरुष और विभिन्न सुधारों को वापस लाना चाहते हैं। प्राचीन भारत सभी मामलों में सर्वोच्च स्थान रखता था, समस्त धन-संपदा का केंद्र था, भारत के ज्ञान और गरिमा के प्रकाश से विश्व के अन्य देश के लोग आलोकित थे, भारत के प्रभाव की प्रतिष्ठा के आगे सभी देश नतमस्तक थे। आर्य महासभा का लक्ष्य भारत के पूर्व-प्रतिष्ठित प्रभाव को वापस लाना है। वर्तमान शासक कई दशकों से एक ऐसी सरकार चला रहे हैं जिसने अत्यधिक भ्रष्टाचार की मिसाल कायम की है, स्वैक्ष्य कानून व्यवस्था के आड़ में शासक दल लोकतंत्र की मरीयादा को खत्म कर आम आदमी के भावनाओं कुचल दिया है। इसलिए, एक राज्य से दूसरे राज्य, राष्ट्र से राष्ट्र, के सभी वर्गों के महिलाओं और पुरुषों में, सभी स्तरों पर विलाप, निराशा, दुःख और रोने के सीवा कुछ नहीं मिला।

इस संदर्भ में अखिल भारतीय आर्य समाज भारत के चुनाव आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त एक राजनीतिक दल है जिसका उद्देश्य देश को इस स्थिति से बाहर निकालने के साथ साथ देश को विकास की ओर प्रगति राह पर ले जाने के लिए, मैं आगामी अठारहवीं लोकसभा चुनाव में बंगाल के सभी लोगों को एक सुखी और शांतिपूर्ण नागरिक और सामाजिक जीवन के निर्माण के लिए आशीर्वाद चाहता हूँ। अखिल भारत आर्य महासभा का एक ही सपना नये भारत का निर्माण करना है। उन राजनीतिक पार्टियों को बाहर लाना चाहता हूँ जो जनता की भलाई के लिए झूठे वादे करते हैं और जिन्होंने देश को सभी क्षेत्रों में पूरी तरह से जर्जर स्थिति में पहुँचा दिया है।

झूठे वादे करने वाले पार्टियों को हटाना आसान नहीं है, बल्कि ये कहना चाहिए कि काफी मुश्किल भी नहीं है, लेकिन वो मुश्किल काम आसान करना बंगाल की जनता को करना है। वो समय था की इसी बंगाल ने एक दिन देश को रास्ता दिखाया है। स्वामी विवेकानन्द, नेता जी सुभाष

चन्द्र बोस, विद्यासागर, राजा राममोहन राय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर ये बंगाल के संत थे जिन्होंने इस बंगाल को शिक्षा, स्वास्थ्य, कला, संस्कृति, कला एवं संस्कृति में प्रथम स्थान पर पहुंचाया है। हमारा दृढ़ विश्वास है कि वर्तमान बंगाल में रहने वाले नागरिक भी ऐसा कर सकते हैं जो भारत के खोए हुए गौरव को वापस ला सकते हैं। अखिल भारतीय आर्य महासभा राजनीति में अपने भागीदारी और नये विचारधारा के साथ आगे बढ़ना चाहती है। आज घोटालों के इतिहास विकास का इतिहास से आगे निकल गया है। जिनके शोषण, छल, कपट ने समाज के सभी वर्गों की एकता, शांति को कलंकित एवं विक्षुब्ध कर दिया है। सरकार के करीबी पूंजीपति बिना रोक-टोक के अपने मनमर्जी से देश को जनता को शोषण और लूट पाट कर रहे हैं। सुशासन का वादा करने वाले नकाबपोश राजनीतिक दलों द्वारा उन्हें संरक्षण दिया जाता है। उनके नेता और नेत्रियों को आम नागरिकों पर शासन करने का नैतिक अधिकार नहीं होना चाहिए। क्योंकि उनके इस गलत आचरण से आम लोगों की आजीविका खतरे पड़ जाते हैं, कई लोग आज विलुप्त होने के कगार पर हैं। अनिश्चितता, संघर्ष, हिंसा और आतंकवाद के कारण देश के लोकतांत्रिक अधिकार खतरे में हैं। इसलिए हम भारत की शांति, एकता और प्रगति को रक्षा करना चाहते हैं। अखिल भारतीय आर्य महासभा एक ऐसी पार्टी है जो सभी स्तरों पर, सभी जातों धर्मों के सभी लोगों की प्रगति, विकास और निष्पक्षता के मंत्र में विश्वास रखती है। हम मानते हैं की बंगाल के लोग बुद्धिमान और चतुर लोग होते हैं, जिस तरह से वे अब तक सरकारें बदले हैं, इस बार अलग नहीं होंगे बदलेंगे।

अखिल भारतीय आर्य महासभा का वचन दलतंत्र नहीं, बल्कि वास्तविक भारत में लोकतंत्र की स्थापना करना है। हमारा कर्तव्य है कि भ्रष्टाचार मुक्त पारदर्शी जवाब देह संसद बनाना। जो हर क्षेत्र में मतदाताओं के कंधों से कंधों मिलाकर चले। हम ऐसा संसद देना चाहते हैं जो जीतने के बाद वे अपने लोकसभा क्षेत्र को अंतर्गत आने वाले सात विधानसभा क्षेत्रों के लोगों पर लगातार हो रहे जुल्म, शोषण और अत्याचार को देखकर भी चुप नहीं बैठे और अत्याचारियों के खिलाफ आवाज उठाए। अन्य दलों के नेता एक बार लोकसभा चुनाव जीतने के बाद अपने वोटों का सुधि तक नहीं लेते हैं। (संदेशखाली की घटना ने राज्य सरकार के आंखों में उंगली डालकर

सच्चाई को दिखाया है जो आम नागरिकों के उपर किस तरह अत्याचार किया गया है।)

हम फिर से वादा करते हैं कि अखिल भारतीय आर्य महासभा एक समूह के नेताओं और दूसरे समूह के मंत्रियों की लड़ाई, झगड़े या हत्या की राजनीति से नफरत करती है और उससे दूर रहना चाहती है। अखिल भारत आर्य महासभा के नामांकित उम्मीदवार अशांत देश में नव विकसित, प्रगतिशील, सर्वधर्म सद्भाव का वादा कर रहे हैं।

हमारा मंत्र है इमंदारी के पथ पर चलकर आत्मनिर्भर बनें। बेलगाम हो रहे बाजार के अर्थव्यवस्था को मद्देनजर उपभोक्तावाद की मांग को पुरा किए बिना या उसे खत्म करके खुशहाली का रास्ता बनाना है। हमारे नामांकित उम्मीदवार की एक ही मकसद होगा सुख-शान्ति के मार्ग में प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करना। नागरिक अधिकारों को अच्छी तरह से स्थापित किया जाना चाहिए साथ ही लोगों को नागरिक कर्तव्यों के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए। अभाव के कारण उत्पन्न विलासिता की बीमारी को दूर करके लोगों को सच्चे सुख के मार्ग पर लाना। यह भारत में उनका भटकता हुआ स्वर्ग है। समाज के विकास के पीछे महाभारतकालीन सामाजिक व्यवस्था थी। बकरूपी यक्ष का प्रश्न कहाँ है, युधिष्ठिर कौन सुखी? उत्तर में युधिष्ठिर ने कहा, अरिणि, जो अप्रवासी दिन में एक बार भोजन करता है, वह वास्तव में सुखी होता है। लेकिन देशभर में किस तरह लोगों की जिंदगी कर्ज के जाल में फंसी हुई है सरकार, व्यापारी, बाजार मालिक, निवेशक सहित सभी को दयनीय इस्थिती में लेजाने की कोशिश कर रही हैं। अखिल भारतीय आर्य महासभा इसके खिलाफ हैं। हमलोग नागरिकों के पक्ष में हैं। क्योंकि हमारा उद्देश्य मानव जाति की मानवता को समृद्ध और सम्मान देकर उसे एक ठोस आधार देना है। युगों-युगों में संतों-महात्माओं की रक्षा करना, दुष्ट शक्तियों का नाश करना, धर्म की स्थापना करने के लिए भारत हिमालय से लेकर कन्याकुमारिका साधना मंत्र से भगवान का संदेश आज भी गंगा-यमुना की धाराओं में प्रवाहित हो रहा है। हम भगवान के दिखाए हुए मार्गदर्शन पर चलते हुए पार्टी अपनी यात्रा शुरू कर रहे हैं। १८ वीं लोकसभा के चुनाव शुरुआती दौर में एक चुनौती जैसी है। चुनाव के नतीजों पर ही देश का भविष्य निर्भर करता है। इसलिए

मैं सभी नागरिकों से अपील करता हूँ कि आपकी सुविचारित राय किसी भी झूठे वादे से प्रभावित नहीं होनी चाहिए। और देश में जनता की सरकार बन सके। हर किसी को समझने वालों की जरूरत होती है। तभी समग्र एवं सामूहिक विकास होगा। देश के हर हिस्से में हर जाति के लोग बिना किसी डर के शांति और खुशी से रह सकते हैं। आप सभी के सहयोग से बनी अखिल भारतीय आर्य महासभा एक बार फिर देश की प्रगति में अहम भूमिका निभाएगी।

हमारा लक्ष्य है

- रेल यातायात और सड़क परिवहन प्रणाली में सुधार करना और इसे हर वर्गों के लोगों के लिए सुलभ बनाना। किराए में बेतहाशा हो रहे वृद्धि रोकना।
- रोजगार के आसान अवसर लोगों की पहुंच में तभी आएंगे जब परिवहन ढांचा सस्ता और बेहतर होगा। एक राज्य से दूसरे राज्य में काम करने वाले लोगों को अपने परिवार से संपर्क बनाए रखने में कोई दिक्कत नहीं होगी।
- लोगों की सरकारी दुर्दशा का एहसास कराने के लिए विभिन्न आयोगों में आमूल-संस्कार सुधार किया जाएगा। ताकि वे वास्तविक समस्या को समझ सकें और वास्तविक समस्या का समाधान कर सकें।
- हालाँकि देश की सबसे बड़ी समस्या हमारी शासन संहिता में है। संविधान में योग्य व्यक्तियों को योग्य स्थानों पर नियोजित करने की व्यवस्था का उल्लेख नहीं है। परिणामस्वरूप, योग्यता के आधार पर नेताओं और मंत्रियों का चयन करने का अवसर नहीं मिलता है। इस पर विचार करना जरूरी है।
- लोकसभा चुनाव हो चाहे विधानसभा या स्थानीय स्तर पर कोई भी चुनाव हो आम नागरिकों के सुविधा के लिए उम्मीदवार उस क्षेत्र के होने चाहिए जो जमीन से जुड़े हों। लेकिन स्थानीय नेता नहीं होने के कारण देखा जाता है कि जरूरतों समय में लोग अपने चुने हुए जनप्रतिनिधियों को अपने करीब में नहीं पाते हैं। लोगों के समस्या को

सुने और समझने के लिए लोक अदालत का शुभारंभ होना अतीव आवश्यक है। चाहे वह साप्ताहिक हो, पाक्षिक हो या मासिक, आवाम तक सीधी पहुंच सुनिश्चित करनी है।

- मंत्रिपरिषद के गठन में श्री श्री ठाकुर अनुकूल चंद्र के निर्देशन में संचालित प्राचीन भारत के आर्य शासन की स्थापना हो। अर्थात् विप्र, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी के सहअस्तित्व में मंत्री या मंत्रिमंडल स्थान मिलना चाहिए। और उनके द्वारा किए काम की समीक्षा भी मंत्रिमंडल जरूरी है।
- राज्य की एकता और अखंडता के लिए हानिकारक करने वाली किसी भी चीज पर समझौता नहीं होगा।
- समाज के अस्तित्व को नष्ट करने वाले व्यक्ति की प्रशंसा नहीं करना और उस व्यक्ति की निंदा नहीं करना चाहिए जो चाहे वह किसी भी जाति या समुदाय का हो।
- बेईमान राजनीति का उन्मूलन। सामाजिक पतन को रोकना। समर्पित सक्रिय संवेदनशील प्रशासन का विकास करना।
- भारतीय राजनीति में साम, दाम, न्याय, दण्ड, नीति भेद के राजधर्म की रक्षा के पवित्र कर्तव्य को सर्वोच्च महत्व देना ताकि किसी भी प्रकार का अन्याय या अधर्म प्रवेश न कर सके।
- भारत का राष्ट्रीय मंत्र सत्यम जयते मुंडक उपनिषद् से लिया गया है। भारत लोक गणराज्य के राष्ट्रीय के प्रतीक अशोक स्तंभ के धर्मचक्र की गरिमा को बनाए रखना ही हमारा उद्देश्य है।
- देश के न्यायालय, जो वास्तव में एक पूजा स्थल के समान हैं, उस पर सम्मानपूर्वक ध्यान दिया जाना चाहिए, ताकि इसकी मान-मर्यादा नष्ट न हो, ताकि देश का एक भी गरीब व्यक्ति न्याय से वंचित न रहे। ताकि सभी को न्याय मिल सके।
- बेईमान राजनीति का उन्मूलन। सामाजिक पतन को रोकना। समर्पित सक्रिय संवेदनशील प्रशासन का विकास हो।

- किसी भी प्रकार की हिंसक गतिविधि के प्रति शून्य सहनशीलता समझौता मत करो।
- किसी भी राजनीतिक हिंसा या जातीय रूप से हिंसक गंदी राजनीति को दूर रहना।
- मुझे देश के चुनावों में प्रतिस्पर्धी उम्मीदवारों के चयन में श्री श्री ठाकुर अनुकूल चंद्र की चेतावनी भी याद आई है। नेता जहां हैं वहां सत्वत/सत्त्वत नहीं हैं।
- निजी स्वार्थ के कारण देश और जनता दोनों नष्ट हो जाती है/नेताओं में कु-उज्जन रह जाती है/देश और जनता नष्ट हो जाती है। क्योंकि नेता देश की रोड़ के हड्डी होते हैं। इसलिए यदि इनके आदर्शों में अंतर हो जाने से राष्ट्र भ्रमित हो जाता है।
- मानव संसाधन विकास के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देना। सांसारिक आवश्यकताओं की पूर्ति से नहीं वृत्ति का पोषण होता है। मानव आनुवंशिक संसाधनों के संरक्षण और शुद्ध पीढ़ी को बढ़ाने पर उच्चतम स्तर का महत्व देना ही हमारा लक्ष्य है।
- समाज के एक बहुमुल्य जड़ विवाह है। उसे स्वच्छ सुंदर बनाना है जिससे समाज से दहेज जैसा बिमारी को खत्म किया जा सके।



सभी भारतवासियों और पश्चिम बंगाल के
कर्तव्यनिष्ठ नागरिकों से हमारा

“वादा”

कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग और संस्कृति का
विकास एवं रोजगारयुक्त होगा
सभी को रोजगार मिल सके

....

आइए अपना सिर ऊंचा रखें
और

कहें कि हम सभी के सपनों को
पूरा करने वाले भारतीय हैं,
सभी के चेहरे पर मुस्कान लाएं

....

संकीर्ण दलीय व्यवस्था की
काली पहाड़ी पर जनता की
लोकतांत्रिक सरकार का निर्माण हो

आर्य महासभा
सुख, शांति, प्रगति और आनंद की झंडा फहरायेगी

कृषि

भारत एक कृषि प्रधान देश है जिसकी अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर है। एक समय था जब देश के कृषि उत्पादों ने विश्व बाजार पर कब्जा कर लिया था। खासकर एशिया माइनर के देशों में, और पूरे देश में बंगाल कृषि उत्पादों और कृषि उद्योगों में उन्नत राज्यों की पहली पंक्ति में था। पराधीन भारत में बंगाल के किसानों को नील की खेती के लिए मजबूर करने के लिए उन पर अत्याचार किया जाता था। अब नील किसानों पर कोई अत्याचार नहीं है लेकिन किसानों पर साहूकारों के शोषण या अत्याचार का कोई अंत नहीं है। हर साल देश भर में हजारों किसान आत्महत्या करने को मजबूर हो जाते हैं क्योंकि वे इस कर्ज को सहन नहीं कर पाते। और इस मामले में सभी राज्यों की तस्वीर एक जैसी है, चाहे वह महाराष्ट्र हो या कर्नाटक, बिहार हो या बंगाल। यदि प्राकृतिक आपदाओं के कारण फसल नष्ट हो जाती है तो आढ़तियों से उचित मूल्य न मिलने पर भी वह फसल बेचने को मजबूर होता है। ऐसे में देश की जनता को अन्न देने वाले लोग अन्न के बिना, आनंद के बिना बेहाल हैं। इतना ही नहीं, सरकार किसानों की मांगों के प्रति हमेशा उदासीन रहती है, उन्हें उपेक्षित रखा जाता है।

इसलिए हमारी योजना

- कृषि पर निर्भर लोगों की सुरक्षा बढ़ाना और गरीबी कम करना। बेहतर गुणवत्ता वाली कृषि पद्धतियाँ अपनाकर कृषि उत्पादन बढ़ाना।
- कृषि वैज्ञानिकों और किसानों के बीच संबंधों की व्यवस्था करना ताकि किसानों या कृषकों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार सलाह या सुझाव मिल सकें।
- फसल उत्पादन का क्षेत्रीयकरण। इस संबंध में सरकार हर तरह की मदद करेगी।
- पूरे देश में किसानों के लिए एक समान फसल बीमा की शुरुआत होगी।

- किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए वार्षिक विशेष सम्मान या पुरस्कार भी।
- किसानों को मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने में मदद करना।
- किसानों को आसान ऋण और कम ब्याज दरों पर उन तक पहुंचाना।
- अनाज भंडारण के लिए देशभर में सस्ते चैन (आइसहाउस) कोल्ड स्टोरेज की स्थापना।
- किसानों को ज्यादा से ज्यादा लाभ पहुंच सके उसके लिए लाभकारी फसल उत्पादन के लिए प्रशिक्षित करना।
- किसानों को ऐसा सहायक प्रबंधन प्रदान करें जिससे फसलें क्षतिग्रस्त या बर्बाद न हों।
- खेती के लिए सिंचाई व्यवस्था को तीव्र गति से काम किया जाना चाहिए।
- फसल उत्पादन में उपयोग किए जाने वाले उर्वरक, कीटनाशकों को किसानों को सस्ती कीमतों पर उपलब्ध कराना।
- पशु उत्पादों का उत्पादन कृषि उत्पादों के उत्पादन से निकटता से संबंधित है। उदाहरण के लिए, मांस, दूध, अंडे। किसानों को उनके उत्पादन में उचित सहायता प्रदान करना। उदाहरण के लिए, चूजों, मुर्गियों या बत्तखों की डिलीवरी। मुर्गीपालन में सहायता।
- देश में फूलों, सजावटी पौधों, औषधीय पौधों, पत्ते की मांग को पूरा करने के लिए किसानों को प्रोत्साहित करना और उनकी मदद करना।
- फूलों की खेती और फूलों के निर्यात के दायरे को और अधिक विस्तारित करना। इस मामले में इसे लागू करने के लिए कार्य संसाधनों का एक विस्तारित दायरा है।
- पंचायतें कृषि की देखरेख में सरकार की कड़ी के रूप में कार्य करें।
- देश भर में और अधिक कृषि अनुसंधान केंद्र स्थापित करना।
- कृषि आधारित औद्योगिक उत्पादन पर जोर, इस संबंध में अलग क्लस्टर बनाना।

- खेती के लिए पर्याप्त पानी की आवश्यकता को पूरा करने के लिए जलाशयों और तालाबों की खुदाई करना।
- वीहड़ क्षेत्रों में पानी के लिए विशेष योजनाओं को अपनाना।
- कृषि एवं गौपालन को काफी महत्व दिया जायेगा।
- भूमि बैंक का निर्माण और पात्र प्राप्तकर्ताओं को भूमि का आवंटन।
- बेघर या आश्रय प्राप्त किसानों के लिए क्लस्टर आवास का निर्माण।
- किसानों के लिए व्यक्तिगत स्वास्थ्य बीमा की शुरूआत।
- उन्नत बीज भंडार का विकास।
- अविद्युतीकृत क्षेत्रों का विद्युतीकरण। विजली सस्ते दामों में उपलब्ध कराना।
- असिंचित क्षेत्रों को सिंचित करने हेतु विशेष पहल करना।
- कृषि में एकीकृत बहुउद्देश्यीय योजनाओं को अपनाना।
- देश में फिर से कृषि क्रांति के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना।

शिक्षा

देश में शिक्षा की हालत इतना खराब है कि किसी से छिपी नहीं है विश्व के प्रथम १०० विश्वविद्यालयों की सूची में देश के दो विश्वविद्यालय ही शामिल हैं। लेकिन भारत में प्रतिभा या उत्कृष्टता की कोई कमी नहीं है। लेकिन प्राथमिक, माध्यमिक या उच्च शिक्षा में राजनीति की घुसपैठियों ने शिक्षा का विनाश कर दिया है। जिस तरह सरकारी शिक्षण संस्थान राजनीति का अखाड़ा बन गए हैं, उसी तरह शिक्षा का समग्र निजीकरण कर दिया गया है और सार्वजनिक विश्वविद्यालयों को शिक्षा की खराब गुणवत्ता वाला करार दिया जा रहा है। निजी स्कूल वास्तव में शिक्षा का कारोवार बन गये हैं। हुआ यह है कि किसी भी सरकार ने सभी वर्गों के बौद्धिक संसाधनों के विकास के लिए अनुकूल माहौल बनाने पर कभी ध्यान नहीं दिया। बाल शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा एक बाजार वस्तु बन

गयी है। और परिणामस्वरूप, भ्रष्टाचार के जड़ें जमा ली हैं। लेकिन अगर वास्तविक शिक्षा की रोशनी समाज के सभी स्तरों तक नहीं पहुंची तो समाज पीछे रह जाएगा। केंद्र सरकार और इस राज्य की मौजूदा सत्ताधारी पार्टी और पिछली सरकार भी इस आम समझ को गलत समझ रही हैं। सहज शिक्षा में शैक्षिक सफलता नहीं मिलेगी। इसलिए देश में भ्रष्टाचार, व्यभिचार और भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। उसे बंद करना होगा।

हमारा लक्ष्य

- स्वतंत्र शिक्षा प्रणाली के बुनियादी ढांचे का निर्माण।
- देश की सोच और चेतना को उजागर करने वाला पाठ्यक्रम लागू करना। राष्ट्रवाद या देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाएंगे।
- प्रथम पुनर्जागरण बंगाल में हुआ। शिक्षा को सुधार से मुक्त उदार, तर्कसंगत दिमाग को वापस लाना चाहिए। यानि शिक्षा को ढोने की बजाय वाहन बनाना चाहिए। शिक्षा को घर घर पहुंचा है।
- सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों के बौद्धिक संसाधनों के विकास हेतु आदर्श वातावरण का निर्माण किया जायेगा।
- स्कूल के बुनियादी ढांचे में सुधार किया जाए, पीने के पानी, शौचालय की व्यवस्था की जाए इस न्यूनतम सुविधा का अभी भी कई स्थानों पर अभाव है।
- शिक्षा विभाग की प्रशासनिक विफलता को पूरी तरह से खत्म किया जायेगा। उनकी जवाबदेही बढ़ाने को सबसे ज्यादा महत्व दिया जाएगा।
- सभी कॉलेज, विश्वविद्यालयों को तथा प्रशासनिक को राजनीतिकरण मुक्त किया जाएगा।
- केवल नैतिक शिक्षा ही नहीं बल्कि पारिवारिक शिक्षा पर भी जोर दिया जाएगा।
- कोठारी आयोग और यशपाल कमेटी की रिपोर्ट को पूरी तरह से लागू किया जाएगा।

- परीक्षा प्रणाली को सुव्यवस्थित किया जाए। प्रश्नपत्र लीक, नकल के मामलों में कोई समझौता नहीं किया जा सकता।
- यह सुनिश्चित करने के लिए सावधानीपूर्वक ध्यान दिया जाएगा कि लिंग भेदभाव, रैंगिंग, जाति भेदभाव से कॉलेज या विश्वविद्यालय प्रदूषित होने से बचाया जाए।
- शिक्षा के समग्र विकास हेतु उच्च स्तरीय टास्क फोर्स का गठन। व्यावहारिक या व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली के दांगरे का और विस्तार करना ही भारतीय आर्य महासभा के उद्देश्य है।

स्वास्थ्य

देश की स्वास्थ्य व्यवस्था जर्जर है इसका प्रमाण हम कोरोना काल में देख चुके हैं। देश भर के अस्पतालों में बिस्तरों की कमी, ऑक्सीजन सिलेंडर की कमी से मरीजों की मौत, जीवन रक्षक दवाओं की कालाबाजारी और यहां तक कि दवाओं या चिकित्सा उपकरणों या उपकरणों की अपर्याप्तता ने दिखाया है कि देश के स्वास्थ्य क्षेत्र की सफलता का दावा करने के प्रयास कितने हास्यास्पद हैं। हैं। इतना ही नहीं, सरकारी अस्पतालों में इलाज की सुविधाएं अब भी अपर्याप्त हैं, जिसके कारण आम लोगों को दर-दर भटकना पड़ता है और बिना इलाज के मरना पड़ता है। और निजी अस्पताल, नर्सिंग होम पैसे के बदले लोगों की जान से खेलते हैं।

देश के स्वास्थ्य क्षेत्र में अकुशल और भ्रष्ट सेवाएं निम्न या मध्यम वर्ग के लोगों के जीवन के लिए एक अशुभ संकेत लेकर आई हैं। लोग उन स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित हैं जिनके वे हकदार हैं। यह सच है कि केंद्र और राज्यों के बीच स्वास्थ्य सेवाओं, महिला एवं बाल कल्याण, सस्ती दवाएँ उपलब्ध कराने को लेकर प्रतिस्पर्धा है, लेकिन वास्तविक स्थिति अलग है। सेवा शब्द नागरिकों के माथे पर इलाज के साथ कितना जुड़ा है, यह बताने की जरूरत नहीं है। और यह भले ही अमीर के माथे पर हो,

लेकिन यह उसका है। हमारी पार्टी का एक लक्ष्य है देश के स्वास्थ्य सेवा को दुरुस्त करना है।

निजी अस्पतालों में इलाज के लिए उन्हें ज्यादा पैसा भुगतान करना पड़ता है। आम लोग को आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को अस्पतालों के बाहर रास्ते में खड़े होने को मजबूर होना पड़ता है।

इस स्थिति को जानते हुए-

हमारा लक्ष्य

- सभी को मुफ्त इलाज मुहैया कराना।
- मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी लाना।
- चिकित्सा सुविधाओं की गुणवत्ता में सुधार।
- ग्रामीण क्षेत्रों में उप स्वास्थ्य केंद्रों, ब्लॉक स्वास्थ्य केंद्रों का बुनियादी ढांचा विकास।
- स्वास्थ्य बीमा या स्वास्थ्य कार्ड का उच्च रीयान्वयन, सरकारी अस्पतालों में इलाज के प्रति लोगों का विश्वास बहाल करने की पहल।
- पूरे देश में AIMS जैसे और अस्पतालों का निर्माण होना चाहिए।
- अस्पतालों में साफ-सफाई, अनुशासन आदि की निगरानी करना।
- स्वास्थ्य क्षेत्र की निगरानी के लिए एक विशेष समिति का गठन, जन शिकायत केंद्र खोलना।
- शहर में इलाज के लिए विभिन्न जिलों के दूर-दराज के इलाकों से आने वाले मरीजों के परिवारों को आपातकालीन आश्रय या आवास की व्यवस्था करना।

उद्योग

हमारे देश में औद्योगिक क्रांति तो नहीं हुई, लेकिन एक समय था भारत के कई राज्यों के कई इलाके औद्योगिक क्षेत्र के कारखानों की

आवाजों से गुलजार रहते थे। पश्चिम बंगाल में हावड़ा, लिलुआ, बार्नपुर, हिंदमोटर, टीटागढ़, कल्याणो, दुर्गापुर, आसनसोल, अंडाल कुछ ऐसे नाम हैं जो कभी औद्योगिक मानचित्र पर चमकते थे। लेकिन वामपंथी गलत कार्यों और औद्योगिक-विरोधी श्रमिक आंदोलनों के कारण प्रमुख भारी उद्योगों में तालाबंदी हो गई। वाम युग के अंत में औद्योगिक क्षेत्र में नंदीग्राम या सिंगूर के आसपास केंद्रित औद्योगिक माहौल का वादा करने का प्रयास किया गया था।

सिंगूर में लगने वाले प्लान्ट को बचाने के लिए पूर्ण कोशिश हुआ लेकिन वह प्रयास सफल नहीं हो सका। टाटा की फैक्ट्रियों को सिंगूर से हटाने के लिए मजबूर किया गया है। नंदीग्राम में केमिकल हब विकसित नहीं किया गया है। हल्दिया पेट्रोकेमिकल का काम धीरे सुस्त स्तर पर हो रहा है। देश में निवेश करने करने वाले निवेशकों को विशेष सुविधाएँ प्रदान करना होगा, उद्योग अनुकूल वातावरण बनाना। हालाँकि ये आवश्यक हैं, फिर भी इन्हें लागू नहीं किया गया है। और मौजूदा सरकार के कार्यकाल में उद्योग जगत के खिलाफ उग्रवाद आंदोलन ने औद्योगिक क्षेत्र में जो छवि बनाई है, उसके चलते कोई भी भारी उद्योग राज्य में निवेश करने को तैयार नहीं है। इस राज्य के उद्योगपतियों को उद्योग स्थापित करने के लिए लाइसेंस मिलने में भी देरी होती है, जटिल प्रक्रिया और सबसे ऊपर स्थानीय राजनीतिक नेताओं द्वारा औद्योगिक निवेशकों के उत्पीड़न ने राज्य की औद्योगिक क्षमता को नष्ट कर दिया है। सम्पूर्ण भारत में औद्योगिक निवेश की स्थिति भी कुछ भिन्न है परन्तु पूर्णतः अनुकूल नहीं है।

कहीं उद्योगों के लिए जमीन मिलने के मामले में तो कहीं उद्योगों के लिए पर्याप्त पानी, विजली, परिवहन ढांचा नहीं है। जिसका प्रमाण यह है कि आजादी के इतने वर्षों के बाद देश की वर्तमान केंद्र सरकार ने मेक इन इंडिया या स्टार्ट-अप नारे के साथ औद्योगिक क्षेत्र में विभिन्न अवसरों और सुविधाओं की घोषणा की है। लेकिन भारी उद्योग कहाँ हैं? परिणामस्वरूप रोजगारोन्मुखी उद्योगों का उतना विकास नहीं हो सका है।

इसलिए हमारा वादा

- पूरे देश में एक व्यापक औद्योगिक नीति विकसित करना।
- जहाँ अनुकूल वातावरण हो वहाँ उद्योगों को विकसित करने के लिए कदम उठाना।
- सभी प्रकार के लाभ प्राप्त करने के लिए उद्योग में निवेश और निवेशकों को प्राथमिकता देना।
- घरेलू उद्योगपतियों के औद्योगिक विकास हेतु ऋण की सुविधा।
- औद्योगिक हितों की सुरक्षा में आने वाली सभी बाधाओं को दूर करना।
- रोजगारोन्मुखी उद्योगों के विकास को प्रोत्साहन।
- वस्तुओं के निर्यात पर जोर।
- बंदरगाह और सड़क परिवहन क्षेत्र का और विकास। ताकि फैक्ट्री विनिर्मित वस्तुओं और आयातित वस्तुओं की हैंडलिंग और डिलीवरी में लागत में कमी।
- विदेशी बाजारों पर कब्जा करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय औद्योगिक मेलों में घरेलू उद्योगपतियों और निवेशकों की भागीदारी को सुविधाजनक बनाना।
- उद्योगों के लिए भूमि आवंटन या अन्य सुविधाओं में जटिलता दूर करने के लिए औद्योगिक मानचित्र बनाना, न कि औद्योगीकरण। जिससे यह पता चल जाएगा कि कहां कोई उद्योग है और किसी उद्योग के लिए आवश्यक विशिष्ट भूमि की पहचान भी एक नजर में हो सकेगी। इसलिए, उचित भूमि अधिग्रहण और निवेश के अवसर विकसित करना संभव होगा।
- भूमि के औद्योगिक उपयोग के लिए पारदर्शी भूमि नीति अपनाई जाएगी।
- सार्वजनिक बुनियादी ढांचे को बरकरार रखते हुए निजी निवेश बढ़ाने पर जोर।

- उन औद्योगिक क्षेत्रों की एक विस्तृत सूची विकसित करें जहां पुनरोद्धार की संभावना है।
- उद्योगों के लिए पर्याप्त पानी की आपूर्ति और उचित जल निकासी जो छोड़े गए पानी को दूषित कर देती है।
- उद्योग के लिए अनुकूल वातावरण बनाना। कार्य संस्कृति को वापस लाना।
- रोजगारोन्मुख उद्योगों का बोलवाला होगा।
- छोटे और मध्यम उद्योगों की उपेक्षा या उपेक्षा नहीं की जाती है। सरकार ऐसे उद्योगों को और विकसित करने के लिए ऋण और अन्य सहायता प्रदान करने में सहायक भूमिका निभाएगी।
- औद्योगिक संगठन में सबसे महत्वपूर्ण कार्य वातावरण को वापस लाने पर ध्यान दिया जाएगा। शहर और जिला स्तर पर सड़क कनेक्टिविटी का और सुधार और विस्तार।
- औद्योगीकरण में लालफीताशाही मुक्त वातावरण का निर्माण किया जाएगा। निवेशक को यथाशीघ्र लाइसेंस या परमिट जारी करना।
- औद्योगिक निवेश में कट मनी या पार्टी सिंडिकेट कोई समस्या नहीं होगी।

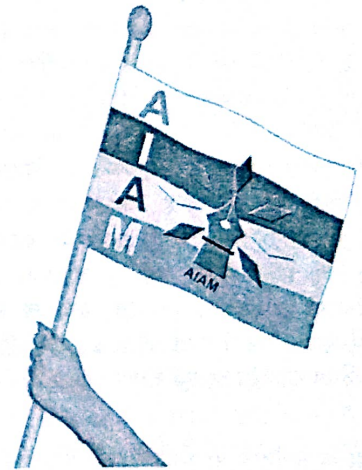
संस्कृति

किसी भी राष्ट्र के मानव जीवन का समग्र विकास सांस्कृतिक परिवेश या पर्यावरण पर निर्भर करता है। उसका स्वाद, खान-पान और जीवनशैली इस सांस्कृतिक घटना को प्रभावित करती है। लम्बे समय तक पराधीन रहे इस देश का जनजीवन विभिन्न धर्मों और जातियों से प्रभावित रहा है। जैसे-जैसे पश्चिमी संस्कृति ने उनके जीवन को प्रभावित किया है, भारतीय अपने पारंपरिक सांस्कृतिक मानदंडों को भूलते जा रहे हैं। परिणाम स्वरूप आज कुसंस्कार अथवा जीवन की प्रगति के विपरीत वातावरण ने उसके जीवन को प्रदूषित कर दिया है। इसलिए स्वादिष्ट स्वस्थ संस्कृति की

आवश्यकता है। अच्छे लोगों का निर्माण करने के लिए आर्य क्रिस्टी की कला को और अधिक फैलाना चाहिए। अच्छे संस्कारों के बंधन हमारे राष्ट्रीय जीवन को सुदृढ़ आधार पर स्थापित करेंगे।

इस सूची के अलावा भी कई कार्य हैं। सुधि ने नागरिकों से अपील की, केंद्र सरकार बनाने के काम में जुटे। अखिल भारतीय आर्य महासभा के प्रतिनिधि आपके ही प्रतिरूप हैं। विकास यज्ञ को सफल बनाने के लिए कृपया अपनी राय देने से पहले सोच-विचारकर ही अपनी राय दें। आइए देश की प्रगति में नई रोशनी लाएं।

हम यह नहीं आंकते कि
कौन अमीर है या कौन गरीब,
हमारा लक्ष्य विकास है,
वह काम निष्पक्ष होगा।



**आर्यकृष्टि के अनुसार राज्य को सूचित करने के लिए
'विधान विनायक' पुस्तक से
राज्य प्रशासन पर कुछ महत्वपूर्ण निर्देश**

हम लोग,

जैसे ही शासन-व्यवस्था में कदम रखते हैं, आप एक जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में अगला कदम रखते हैं—जागरूकता, कुशल आज्ञाकारिता के साथ इसे ध्यान में और अन्या सावधान रहे, ताकि आप सदाचार में अटल रह सकें और एक के सच्चे व्यक्ति के स्वरूप में अपने दिल में अटल रह सकें। वैध व्यक्तित्व,—तो आइए यह सब करें श्रार्थ-संकेत वृत्ति।

१. पहले से सावधानी वर्ते

विवाह और प्रजनन सुधार पर, यह व्यवस्था करें कि अच्छी संस्कृति की बेटियों को निम्न या बुरी संस्कृति वाले कुलों परिवार में न भेजा जाए; कन्या का कुल-संस्कृति और चरित्र बड़े या पुरुष के कुल-संस्कृति और चरित्र के प्रतिकूल हो; दहेज हो या, वासना निवारण पर ध्यान दो, पुरुषों के संयम और स्त्रियों के सतीत्व के आधार पर तुम्हारे घर, समाज और समुदाय का उत्थान हो; सबसे पहले बोलने का उद्देश्य यह है—यदि यह सुजानन नहीं है, जिसके नियंत्रण से जातक को सर्वोत्तम जैविक संगठन, जीवन काल, बुद्धि, बल—सामंजस्यपूर्ण चरित्र और गुणात्मक विशेषताओं के साथ प्राप्त होता है—यदि आप ऐसा नहीं कर सकते हैं, राज्य-सामंजस्य और राज्यसत्ता का महत्व दिन-ब-दिन अंधकारमय और जड़ होता जाएगा; प्रकृति चाहे जो भी हो, वह कभी भी विज्ञान के लिए सहज, सरल, कल्याणकारी नहीं बन सकता और कल्पना से परे तो मूर्खता ही है; अतः राष्ट्रीय संगठन तभी सुसंगठित रह सकता है जब वर्णाश्रम के नियमों का समुचित नियमित किया जा सके, यह बात प्राचीन ग्रंथों में व्यापक रूप से मनाई गई है, इसलिए राष्ट्रीय संगठन का मुख्य कार्य वर्णाश्रम की व्यवस्था एवं संरक्षण करना है।

२. कृषि में

बीज और मिट्टी के सामंजस्य पर ध्यान दें, उस मिट्टी की व्यवस्था करें

जिसमें बीज की उपज उपजाऊ और प्रचुर मात्रा हो, ताकि लोगों को कृषि के व्यावहारिक सिद्धांतों की शिक्षा मिले—अपनी व्यवस्था और प्रेरणा से लोगों को यथासंभव कृषि कार्य में व्यस्त रखें, जिससे धीरे-धीरे विभिन्न राष्ट्रीय फसलों की प्रचुरता हो, और प्रशासनिक संगठन का उचित प्रबंधन हो सके। कृषि के सभी संभावित पहलुओं में नदी-पुनरुद्धार, सिंचाई और वानिकी पर अच्छा नियंत्रण। सहायता, ताकि देश न केवल आत्मनिर्भर बने, बल्कि अधिशेष भोजन वितरित करके दूसरों की कमी को भी दूर कर सके।

३. ईसानियत स्नेह

इतना प्रेरित किया जाए कि वे क्षमता से ओत-प्रोत हो सकें और कौशल, समझ तथा श्रम से देश-विदेश की आवश्यकताओं के लिए उद्योग का विकास कर सकें—कुटीर उद्योगों के विस्तार पर विशेष दृष्टि से—ताकि अधिकांश परिवार उद्योग के रखरखाव और ऐसे सभी मामलों में संलग्न रहें। आवश्यक सामग्रियों की आपूर्ति में तेजी लाना—होगा औद्योगिक मशीनरी और ऊर्जा की आपूर्ति को आसान, बनना है। सुविधाजनक और व्यापक बनाना; तुरंत परिवहन और संचार व्यवस्था करें ताकि जीवन देखभाल की गुणवत्ता के किसी भी पहलू से कोई भी किसी भी तरह से बाधित न हो; इस तथ्य पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए कि श्रमिक अमीरों के अधीनस्थ बन जाते हैं, और अमीर श्रमिकों के संरक्षक बन जाते हैं, और श्रमिक अपने परिवार को श्रम प्रदान करके आत्मनिर्भर बन जाते हैं और अपने व्यक्तिवाद को बनाए रखते हुए अमीर बन जाते हैं।

४. व्यापार-व्यापार-नियमः

ऐसा शुभ, आसान, आज्ञाकारी होना चाहिए, जिसके कारण या जिसके तहत मनुष्य इतना अभावग्रस्त न हो, बल्कि योग्यता और प्रचुरता से भरपूर हो; जो देश में उगता है, जो जीवन की सहज सेवा और आचरण के लिए नितांत आवश्यक है, वह देश में नहीं मिलता; ऐसी वस्तुओं का विदेशों से त्वरित और आसान आयात ताकि लोगों को कीमत, अधिकता के कारण परेशानी न हो, या इसकी कमी के कारण किसी की जान न जाए—इसे बड़ी सक्रियता और पैनी नजर से हल करना ही समीचीन है।

दैवी विचार-ताकि सार्वजनिक विरोध के लिए अवकाश न रहे; कृषि और उद्योग का किफायती उत्पादन और वितरण तथा व्यापार और विदेशी मुद्रा का लाभदायक विस्तार अर्थव्यवस्था के मुख्य आधार हैं और कृषि इन सभी को रीढ़ है।

५. शिक्षा को आदर्शवादी बनना है

शिक्षा के अनुयायियों को धर्म के आधार पर एक सुसंगत आधार बनाता है, ताकि अन्य सभी चीजों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए संबुद्ध संबंधन में वास्तविक योग्यता के विकास को प्रोत्साहित किए बिना कोई भी शिक्षण संस्थान निरर्थक और अलग-थलग न हो जाए; सम्मानजनक और विचारशील बनें ताकि हर कोई आप से सीख सके। तेज गति से चल सकते हैं—उसके लिए सही माहौल बनाएँ; शिक्षकों को उस उच्च शिक्षा का प्रतीक बनना चाहिए, जो सही शिक्षा दें सके। यदि वे अच्छे दिमाग वाले, दूसरे व्यक्ति भक्त नहीं बनते हैं—आत्ममंथन से प्रभावित—छात्र भी सुसंगत नहीं होंगे, गलत कामों रुचि नहीं लेंगे, जिससे शिक्षा एक अंधकारमय पृष्ठभूमि के इर्द-गिर्द घूमती रहेगी; शिक्षा के साथ, कानूनी कौशल और शक्ति इतनी सूक्ष्म, त्वरित और कुशल बन जानी चाहिए, कि लोग किसी भी मामले का सामना करते ही समझ सकें, सही और गलत, अच्छा और बुरा, का पहचान कर सके अतीत और भविष्य, वर्तमान का सामंजस्य बना सके आप अपना भविष्य से चुन सकते हैं।

६. देश के अनुसंधान केंद्र

दीपाली को एक शोध केंद्र बनाया जाना चाहिए, जिससे सभी को दूरगामी परीक्षाओं में समरसता एवं पालन-पोषण का सन्देश निश्चित सार्थकता के साथ सामने आ सके, जिसके अनुपालन से वे जीवन एवं समृद्धि में निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर होते हुए दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ सकें। आदर्श और धर्म का आधार। इसकी व्यवस्था करनी होगी।

७. आपकी सेहत पर असर पड़ सकता है

हमलोग का मकसद है कि प्रत्येक व्यक्ति सदाचार में निपुण हो और स्वास्थ्य, सिद्धांत, चिकित्सा, भोजन, उपचार में कोई कमी न हो, आप लोगों के जीवन में स्वास्थ्य और जीवन शक्ति मजबूत हो, और आपके

अस्तित्व में राहत का संचार हो। बनाता है—हार्दिक, सन्तुष्ट रहकर मधुमय किरणें फैलाकर सभी को अस्तित्व की संपदा से समृद्ध कर सकते हैं।

८. शांतिरक्षक-विभाग और सैनिक विभाग

प्रत्येक व्यक्ति निष्पक्ष भाव से आदर्शवादी, धार्मिक आधार पर बेईमानी से बचने का आश्रय बन सके, इसका विशेष ध्यान रखें और संकट के घड़ी में विशेष उपाय अपनाएँ; सुरक्षा जहां संदेह की रोकथाम की नितांत आवश्यकता है—त्वरित कार्रवाई में; और, हर किसी को शांति-रक्षकों और सैनिकों के प्रति समर्पित होना चाहिए, सरकार का सुधार, उसके धार्मिक गुणों के साथ, स्वाभाविक हो जाता है—भाषण, उपयोग और कार्रवाई का सामंजस्य बने रहे ताकि हर आदमी महसूस कर सके और आनंद ले सके कि सरकार उनके लिए बहुत कुछ नहीं कर रही है। अच्छा हो या प्रिय, सभी को आसानी और आशा मिल सकती है, वे सजा को राहत के रूप में स्वीकार कर सकते हैं।

९. जासूसी विभाग

उन्हें इतना तेज, कुशल, दक्ष, निष्ठावान और सक्रिय बनाया जाए—इतना श्रेयार्थ—अविदिपन्न—पर केंद्रित किया जाए कि वे कुछ भी करें—किसी भी चीज के लिए श्रेयार्थ को त्याग न कर सकें, उनके जीवन की जड़ें धर्म की नींव में इतनी मजबूती से जमी रहें कि, जिसका उल्लंघन करना उनके लिये असम्भव हो जाता है; उनकी आँखें, कान, जीभ, नाक, त्वचा आदि इसलिए और भी तीव्र और सटीक को समझदार बनाया जाना चाहिए; वे सहज, विवेकशील, भाव-महत्वपूर्ण बनें, इसके लिए उनकी उपस्थिति, वाक्य रचना ऐसी बनाई जानी चाहिए कि—किसी मामले का उनका वर्णन वास्तविकता की तस्वीर बन सके, इसके लिए उनके विचारों को इतना सुदृढ़ बनाया जाना चाहिए; विवरण में कोई भिन्नता नहीं हो सकती है, अनुचित रूप से गलत धारणा या तथ्यों से अनभिज्ञ होने के कारण उन्हें दिए गए किसी भी विवरण से कोई भी व्यक्ति अनुचित रूप से प्रभावित या परेशान नहीं हो सकता है, और यह फिर से, आलस्य या प्रलोभन से, उनकी त्वरित कला ज़रा भी विचलित नहीं होना चाहिए, बुरे वातावरण से नहीं घिरा होना चाहिए। फिर भी

उन्हें दिमाग से इतना प्रशिक्षित किया जाना चाहिए कि चाहे वे किसी भी स्थिति में पड़ें, उनके लिए इसे तोड़ना और वापस आना असंभव हो जाता है, जिससे वे चमकते हैं साहस और दृढ़ विश्वास, दिव्य चरित्र, शैतान-भेदी इंद्रियाँ और बोधि-बेहतर, कुशल, कुशल, कुशल, समर्पित, धैर्यवान, मेहनती, परिश्रमी बोधया संधिसाई उनकी पसंदीदा संपत्ति-जासूस-विभाग हैं, और सुरक्षा और उत्कृष्टता के लिए राज्य को एक उपयुक्त खोजी विभाग की भी आवश्यकता है, जो कुशल, कुशल, कर्तव्यनिष्ठ, कुशल दृढ़ संकल्प के साथ त्वरित कार्रवाई के साथ राज्य की संपत्तियों और जोखिमों का सटीक निर्धारण कर सके, और उचित नियंत्रण के तहत जोखिमों को समाप्त करके संपत्तियों में सुधार किया जा सके। स्मार्ट कानूनी गतिविधियों में...

१०. न्यायालय में जन

उस श्रद्धेय धार्मिक एकता के साथ, ताकि न्याय और सुशासन सक्रिय हो जाए—ताकि हर कोई व्यक्ति आश्वस्त और संतुष्ट हो। सही शासन में संलग्न होने के लिए उत्सुक हो, उसके कल्याण के लिए दृढ़ हो—स्वाभाविक आत्म-आराम पर केंद्रित हो जाता है—स्वाभाविक आत्मचिंतन में लग जाता है।

११. कर्मचारी नियुक्त प्रतिक्रिया

कर्मचारी नियुक्त प्रतिक्रिया सबसे पहले एक सुसंस्कृत व्यक्ति को अपने कुल और वंश को नहीं देखना चाहिए, चाहे वह मातृ हो या पैतृक पक्ष का हो—उसमें कोई अनुचित या अवैध विचलन तो नहीं है, क्योंकि यदि है, तो चाहे वह कितना भी कुशल और बुद्धिमान क्यों न हो, उसमें कुछ न कुछ जरूर कमी या अवश्य होगा वह जो विश्वासघाती होता है; फिर, विश्वविद्यालय की उपाधि ही एकमात्र मानदंड नहीं होनी चाहिए, विश्वसनीयता, कौशल, पौरुष, कार्य उत्कृष्टता के आधार पर चयन करना उचित है, यदि विश्वविद्यालय की उपाधि है—तो यह स्वास्थ्य, मनोबल के अलावा अच्छा है। साहस, बुद्धिमत्ता, परिश्रम, दिमाग की उपस्थिति, सुसंगत त्वरित सोच, ठोस निर्णय लेने की क्षमता, सटीक और त्वरित निष्पादन गतिविधियाँ आदि अत्यधिक वांछनीय हैं; यह देखा जाना चाहिए कि पद का उम्मीदवार अपनी उपयोगिता-आनुपातिक-जैविक-स्थिरता को आधार बनाता है।

१२. गृह एवं विदेश कार्यालय

गृह एवं विदेश कार्यालय इस तरह से मजबूत किया जाना चाहिए कि घरेलू और विदेशी देशों के बीच सामंजस्यपूर्ण पारस्परिक अनुपालन हो कहीं भी संवेदनहीन असंगति नहीं होना चाहिए वे दोस्ती में अच्छी तरह से जुड़े-हमारी पार्टी का मुख्य उद्देश्य है कि पारस्परिकता में, राज्य के दर्जे और हितों को जारी रखना, नागरिक अपील के प्रोत्साहन के साथ राज्य के पोषित धर्म, संस्कृति और आदर्शों को अक्षुण्ण रखना; विदेशी मित्रता को अटूट रखना, कोई भी षडयंत्र उस मित्रता को तोड़ने में सक्षम न हो, और उन्हें ऐसा बनाएं कि वे आपके राज्य के विपरीत सभी के संरक्षण और उन्मूलन में आवश्यक रूप से सक्रिय आत्म-शिक्षार्थी बनावे।

१३. फिर से, उस आदर्श को मूर्त रूप देने के लिए

राजदूतों की नियुक्ति भी इस प्रकार करें कि राष्ट्रीय सभा में रुचि रखने वाला, संस्कारवान, विद्वान, स्वस्थ बुद्धि वाला, वर्तमान विचारों वाला, नैतिक, मृदुभाषी, धर्म, कला और आदर्शों के प्रति अत्यंत ईमानदार, कौटिल्य-अनुभव, विचारोत्तेजक, मार्मिक—इसे साफ करने के लिए सक्षम रहे। इस तरह के जन्म और गुणवत्ता का एक महान व्यक्ति मिशन, घृणा, अव्यवस्था के लिए एक उपयुक्त पात्र है जो राज्य कौशल और हितों के आदर्शों, धर्मों और पंथों को बाधित, कम या निंदा करता है, जो अच्छी तरह से सूचित वाक्यों के माध्यम से, उसे उपयोग में निर्देशित करते हैं। एक व्यक्ति जो राज्य का दर्जा और हितों को स्थापित कर सकता है—एक नियंत्रित बुद्धि वाला व्यक्ति—एक अच्छी तरह से समन्वित गुप्त सेवा—राजनयिक मामलों में वांछनीय है।

१४. प्रचार प्रसार प्रचुरता होनी चाहिए

ताकि देश के आदर्श, देश की संस्कृति, देश के विकासवादी कदम, विदेश में सभी को प्रभावित करें और प्रेरित करें—विकास और अभ्यास के संदर्भ में सभी सम्माननीय बनें। अपने देश की जनता और व्यक्तियों में; धर्म के सिद्धांत, आदर्श, पंथ और सिद्धांत पर चलने का प्रेरणा जिनमें से सभी को निर्धारित, संचरित, विनियमित किया जाता है, ताकि प्रत्येक व्यक्ति सहानुभूतिपूर्ण अर्थ में, पारस्परिक विशेषता सम्मान में,

भाषण में, उपयोग में, आचरण में एक इकाई बन जाए—इसकी निर्धारित व्यवस्था बिल्कुल समीचीन है, और, की उपेक्षा जितनी अधिक होगी वह समीचीनता, उतने ही अधिक व्यक्ति एकजुट होता जाता है। जैसे—जैसे एकजुटता-व्यक्तित्व पारस्परिकता क्षमता-उन्मुख विकासवादी आवेग उदासीनता की ओर बढ़ता है, व्यक्तिवाद का स्थान ले लिया जाता है—वृत्ति का व्यभिचारी चक्र, मन की काम वासना, जो लाभ के साथ अपने ही अस्तित्व का उपभोग करती है, अपने ही भोग सामग्री के संग्रह में रुचि लेती है, यही मूत्र परिसंचरण है—बस्ती, जनता और राज्य को पूर्ण विनाश में दफन करने का आत्मघाती आवेग—जो बड़े पैमाने पर विद्रोह पैदा करता है।

१५. निजी शासन संस्था

उनका हर एक कर्मचारी-परोपकार की भावना से, यथासंभव सर्वसम्मति के साथ, प्रदेश की हर बस्ती में जाकर गुण-संपन्न ढंग से उनकी बातें सुनता है, इसके अलावा शहरों विशेषकर गांवों का भी नियमित निरीक्षण करता है, जानकारी लेता है। लोगों के सुख-दुख, लोगों की शिकायतों के बारे में जानकारी लेना, उपायों की खूबियों पर चर्चा करना, अनुचित व्यय पर रोक लगाना और विशेष मामलों में सहायता का ऐसा प्रावधान करना जिससे हर किसी को यह पता चल सके कि कैसे शासी निकाय, इसके प्रत्येक बस्ती के साथ, उनसे निकटता से संबंधित है; यह अवश्य करना चाहिए।

१६. टैक्स वसूली कानून सरल होगा

आपके द्वारा दिए टैक्स से देश मजबूत होता है। आम लोगों का कर आपकी सरकार को शक्तिशाली बनाती है, उसी कर के कानून को आम नागरिकों के हित में सरल बनाएं। आपका टैक्स मनुष्य के कर को गले लगाए, और मनुष्य की योग्यता और सच्ची रुचि उनके चेहरे पर चमक आ जाती है। जो अधिक उपयुक्त हो जाए—और आपके ध्यान में इस प्रकार वह समृद्ध और समृद्ध हो जाता है; परिणामस्वरूप, आपका खजाना प्रत्येक राष्ट्र के हित—उत्तेजक योगदान से उत्साहित है। और, उसका प्रयोग इस प्रकार होना चाहिए—ताकि कोशिका स्वतंत्र रूप से घूम सके। और खर्च ही महंगाई का कारण बन जाता है; जहां राजकोष

अनियंत्रित है, वहां जन-दक्षता उत्पादन-दर के जुनून से प्रेरित होती है। और खजाने को उत्साहित करने का प्रयास करें—दयालु देखभाल के साथ; जनता की सुरक्षा के लिए उत्तराधिकार के माध्यम से, राजस्व का दसवां हिस्सा आरक्षित करके, अन्यायपूर्ण व्यय के उचित नियंत्रण के तहत सार्वजनिक सुरक्षा सुरक्षित करें, और उस नौ-दसवें हिस्से के भीतर जनता के रखरखाव और संपादन के लिए जो आवश्यक है उसे पूरा करने का प्रयास करें; जब तक कोई उत्पाद इतनी प्रचुर मात्रा में प्रदर्शित नहीं होता—इसलिए, सुरक्षा की लागत होती है परिश्रम की उपेक्षा न करते हुए उस संचित धन से वह धनवान बन गया उत्पादन को और अधिक प्रासंगिक बनाएं; उसमें तुम्हारा राज्य भी शक्तिशाली हो जायेगा।

१७. अपने ही देश की कमजोरियां जो हैं

राष्ट्र को उन्हें सुधारने का अधिकार देना चाहिए, देश के गरीब तबके के लोगों के बीच समृद्ध बनाना हमारा लक्ष्य है, जो योग्य हैं उन्हें ज्ञान से प्रकाशित करना चाहिए, जो आलस्य की गोद में पड़े हैं उन्हें ज्ञानवान बनाना चाहिए, धर्मात्माओं को और अधिक तेजस्वी बनाना चाहिए—वैध विशेषताएं।

१८. बेवफाई और अपराध

उचित तरीकों से रोकें—त्वरित कार्यवाही में परिणाम स्वरूप मनुष्य की वह वृत्ति बढ़ने के बजाय धीरे-धीरे सिकुड़ती जाती है और संघर्ष में समाप्त हो जाती है—जहां आप देखेंगे—क्या बेईमानी है, आदर्शों, धर्म, संस्कृति और संस्कृति के खिलाफ है—जो राजनीतिक दल के लिए विनाशकारी है और आपके संगठन और अस्तित्व को घातक रूप से मार रहा है—मजबूत तैयारी के साथ तुरंत उस पर काबू पाने में कोई गलती न करें, क्योंकि देर होने पर उस पर काबू पाना मुश्किल साबित हो सकता है; धन को बढ़ावा देने और बेईमानी की रोकथाम के लिए, जहां आवश्यक हो, समान, उपहार, भेद और दंड के विशेष विचार और विवेकपूर्ण निर्णय के साथ, यथासंभव आसानी के माहौल में उन्हें निष्पादित करने में बिल्कुल भी उपेक्षा न करें; यदि समस्या का समाधान साम-दाम में होता है, तो मतभेद पैदा करने मत जाओ, जहां मतभेद पैदा

हो वहां दंड देने मत जाओ; परंतु जहां आवश्यक हो वहां डंडा न छोड़ें, जहां आवश्यक हो वहां पुनः एक साथ चतुर्विधि अपनाएं; परिणाम स्वरूप जो कुछ भी अवैध है, जो कुछ बेईमान है, जो कुछ गलत है, वह आपके शासन और नियंत्रण के परिणामस्वरूप आदर और सम्मान प्राप्त हो।

१९. सबसे ऊपर आपका शासन होना चाहिए

चरित्रवान लोक संगठन और संपन्न व्यक्ति स्वतंत्रता के पोषण का ध्यान रखते हैं, विशिष्ट संतों के प्रति विशेष श्रद्धा और सम्मान का व्यवहार करते हैं, और शासन करने वाली परिषद के निदेशक देश के सच्चे धर्म-प्रवर्तकों की तरह होते हैं जो श्रद्धापूर्ण रुचि और उत्सुकता के साथ बैठक में भाग लेते हैं। उनकी दूरदर्शी सलाह और अनुशासन-स्वीकृति और पहल पर ध्यान दें, जिससे शासन-सत्ता स्वतः ही वैश्विक कल्याण के पथ पर अग्रसर हो सके।

२०. यहाँ वे जाते हैं—

मेरे मन में आए साहसिक शब्दों में; हालाँकि, ऐसा लगता है कि शासन करने वाली परिषद या शासन—संगठन के बाहर, हमेशा एक ऐसा बुद्धिमान, बहुआयामी व्यक्ति, संस्कृति और धर्म का अनुयायी, एक ऐसा व्यक्ति होता है जिसमें शासन करने वाली परिषद के सभी नियमों और प्रबंधन को पूरा करने की विशेषताएं होती हैं। सामाजिक और सामूहिक रूप से, लोगों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए। अवलोकन करता है—सही जानकारी के पास जाकर सही अर्थ को समझता है—चर्चा में सभी मामलों को पूछताछ के द्वारा समझता है और आवश्यक और कुशल अनुशासन के रूप में निर्देश देते हुए श्रद्धापूर्वक चिंता के साथ सेवा करता है—वात चाहे पुर्तिका की हो या कौटिल्य की। यदि आप अपने को तदुसार संगठित करते रह सकें तो शासी निकाय अटल आदर्शों की दिशा में अधिक निष्पक्ष, केन्द्रीकृत एवं सुन्दर बन सकता है; क्योंकि, जो लोग शतरंज खेलते हैं,—अपनी दुष्ट जिज्ञासा के कारण उनका विवेक इतना समाप्त हो जाता है, उस कुशल चतुर संरक्षक का संकेत सफलता की ओर ले जाता है, मेरे विकास और विचार में, ऐसा व्यक्ति शासन करने वाली परिषद के बाहर अपरिहार्य है, हालाँकि सभी मामलों में, हर समय, ऐसा व्यक्ति मिलना मुश्किल है; और, चाहे ऐसे

लोग हों या न हों—शासन करने वाली परिषद एक ऐसे मजबूत नागरिक समाज की हमेशा आवश्यकता होती है, जो अच्छे, सुसंस्कृत और अनुशासित, आदर्शवादी, सर्वगुणसंपन्न, सुशिक्षित, जानकार नागरिकों से बना हो। सक्रिय और चरित्रवान। पुरयमान-सर्वोत्तम सभ्य से पूर्णतया सम्पन्न होगा, सर्वोत्कृष्ट से सम्पन्न होगा—जिन्हें धार्मिक विकास के नियमों के अनुसार सार्वजनिक जीवन का नियमन करना चाहिए, वे अधिक करेंगे, यदि शासन का कोई नियम बनाना हो तो उनकी अनुमति के बिना उस सभा में नहीं उठाया जा सकता; यदि परिस्थिति, देश, काल एवं आवश्यकता के अनुरूप ऐसी व्यवस्था न हो तो लोग अपनी विशिष्ट व्यक्तिवादी लचीलेपन को अधुण्ण रखते हुए आदर्शवादी एवं सामंजस्यपूर्ण ढंग से विकास के पथ पर आगे नहीं बढ़ सकेंगे; इसके अतिरिक्त शासी निकाय के कर्मचारियों की विकृतियों, व्यभिचार, विचलन आदि का नियमन कर उनके कुत्सित आचरण को नियंत्रित करना कठिन होगा, अतः शासी निकाय स्वतः एवं पूर्णतया उनकी स्वीकृति से बाध्य हो जायेगा तथा प्रस्ताव। दूसरी ओर, व्यभिचार, विडम्बना और दुष्ट व्यभिचार उत्पन्न होना निश्चित है, शहर, महाकुमा, थाने और प्रतिष्ठित गाँव—प्रत्येक स्थान पर इस गैर-सरकारी संगठन का एक परिषद होना चाहिए, अधिमानतः पाँच से पंद्रह से अधिक सदस्य नहीं, जो स्थानीय सरकार के कामकाज पर कड़ी नजर रखेंगे और इसे सुचारू रूप से और अपने केन्द्रीय संगठन के उच्चतम स्तर पर चलाने में मदद करेंगे। और शासन। गठन और सुधारात्मक निर्देशों सहित स्थानीय शासन पर नियमित रिपोर्ट प्रस्तुत करना, इस संगठन के नागरिकों के लिए शासन के प्रति लापरवाह होना और किसी भी संघर्ष या उनके विशिष्ट आदर्शों से गुमराह होने का प्रलोभन देना पूर्ण अक्षमता और अनुचितता का संकेत है। धर्म और पंथ; मुझे ऐसा लगता है, यदि शासन-संगठन के पीछे ऐसा कोई बंधन न हो—तो अनुचित की अधिकता के कारण समुदाय, समाज और राज्य संगठन या वर्णाश्रम की स्थिति को धूल में मिलाने के अलावा कोई रास्ता नहीं होगा; आप जो भी व्यवस्था करें, यदि वह जीवन और विकास के लिए अनुकूल नहीं है—यदि वह आनुपातिक नहीं है; परंतु यह पूर्ण विनाश है, राष्ट्र शक्तिहीन, असंबद्ध, आदर्श विहीन, धर्म एवं संस्कृति विहीन होने को मजबूर हो जाएगा, क्या होगा इन सभी

विनयाओं के माध्यम से लोगों की क्षमता इतनी तीव्र-कुशल हो जाएगी —कि वे पूर्णतया आत्मनिर्भर हो जाएंगे—निर्भर, उसके अलावा कोई व्यवस्था, पद्धति या समय-संघर्षों में समझौते टूट भी जाएं तो तुरंत त्वरित हो जाते हैं।

इन्हें आसानी से इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है। इसलिए किसी भी व्यक्ति को उस अंतर से उन्हें किसी भी तरह से कुचला या दबाव नहीं दिया जाता है, न ही किसी को ऊपर उठने दिया जाता है, और यही व्यक्तिगत एवं सामूहिक जीवन में कानून के अनुशासन का वास्तविक योगदान होता है; जब तक ऐसा नहीं होता, समझना चाहिए—तब तक वे आत्मनिर्भर नहीं बनते; फिर, भले ही प्रणाली उत्तम और सुंदर हो, यदि इसका ठीक से पालन न किया जाए, तो यह शायद ही वांछित परिणाम दे सके; ईश्वर प्रभुत्व की गति है, ईश्वर जीवन और विकास का विधायनी विधाता है, ईश्वर पृथ्वी है, अनुशासन-अभ्यास शिक्षा और उपयोगी-प्रवर्तक गतिविधियाँ मनुष्य की क्षमता हैं।

(विधान-विनायक, ३८७)

भर्गविभूति ! सविता ! सौरि !
सुंदरश्री ! विश्वदृक् ! पालनधृति !
परमपुरुष ! नमस्ते।

अन्तर्देवता परमपिता के कृपा से समृद्ध होके आप सभी लोग आच्छे रहे
वंदे पुरुषोत्तम ! वंदे पुरुषोत्तम ! वंदे पुरुषोत्तम !



अखिल भारतीय आर्य महामंडळ



लोकसभा चुनाव
2028